Toppersnotes®
Unleash the topper in you

JHARKHAND

TET

Jharkhand Teacher Eligibility Test

भाग - 4

सामाजिक अध्ययन शिक्षक (कक्षा 6-8)

इतिहास व राजव्यवस्था

SIERRA INNOVATIONS

विषयसूची

S No.	Chapter Title	Page No.
1	इतिहास के स्त्रोत	1
2	प्रागैतिहासिक काल	5
3	सिन्धु घाटी सभ्यता	8
4	वैदिक युग	12
5	बौद्ध धर्म और जैन धर्म	16
6	मौर्य साम्राज्य	20
7	गुप्त काल और गुप्तोतर काल	23
8	प्रारंभिक मध्यकालीन भारत	27
9	अरब आक्रमण एवं दिल्ली सल्तनत	29
10	मुग़ल साम्राज्य	34
11	विजयनगर और बहमनी साम्राज्य	40
12	मराठा साम्राज्य	43
13	भक्ति और सूफ़ी आंदोलन	45
14	भारत में यूरोपीय शक्तियों का आगमन	50
15	18वीं शताब्दी का भारत और भारत में ब्रिटिश विस्तार	51
16	ब्रिटिश प्रशासन (1757–1857)	54
17	1857 का विद्रोह एवं उसके परिणाम	56
18	ब्रिटिश भारत के विरुद्ध जन आंदोलन	59
19	सामाजिक–धार्मिक आंदोलन	61
20	राष्ट्रवाद का उदय और भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना	65
21	राष्ट्रीय आंदोलन (1905–1919)	68
22	गांधी युग और राष्ट्रीय आंदोलन (1919–1940)	71
23	स्वतंत्रता की ओर (1940 – 1947)	78

विषयसूची

S No.	Chapter Title	Page No.
24	स्वतंत्र भारत की चुनौतियाँ	81
25	क्रांतिकारी गतिविधियाँ	85
26	हम और हमारा समाज	88
27	ग्रामीण एवं नगरीय समाज	91
28	लोकतंत्र	95
29	भारतीय संविधान का निर्माण	97
30	भारतीय संविधान की विशेषताएँ	101
31	प्रस्तावना	106
32	राज्य एवं केंद्रशासित प्रदेश	108
33	मूल अधिकार	111
34	नीति निदेशक सिद्धांत	116
35	मौलिक कर्तव्य	118
36	राष्ट्रपति एवं उपराष्ट्रपति	119
37	प्रधानमंत्री एवं मंत्रिपरिषद	125
38	संसद	127
39	न्यायपालिका	134
40	राज्य विधानमंडल	142
41	स्थानीय स्वशासन	148
42	संवैधानिक एवं गैर–संवैधानिक निकाय	155
43	झारखण्ड का अलग राज्य के रूप में गठन	159
44	झारखण्ड की राजनीति एवं शासन व्यवस्था: भारतीय संविधान लोक प्रशासन एवं सुशासन; विकेंद्रीकरण: पंचायतें एवं नगर पालिकाएँ	164

1 CHAPTER

इतिहास के स्त्रोत

इतिहास की सभी घटनाएँ उन स्रोतों पर निर्भर करती हैं जिनके माध्यम से कोई विशेष विवरण लिखा गया है।

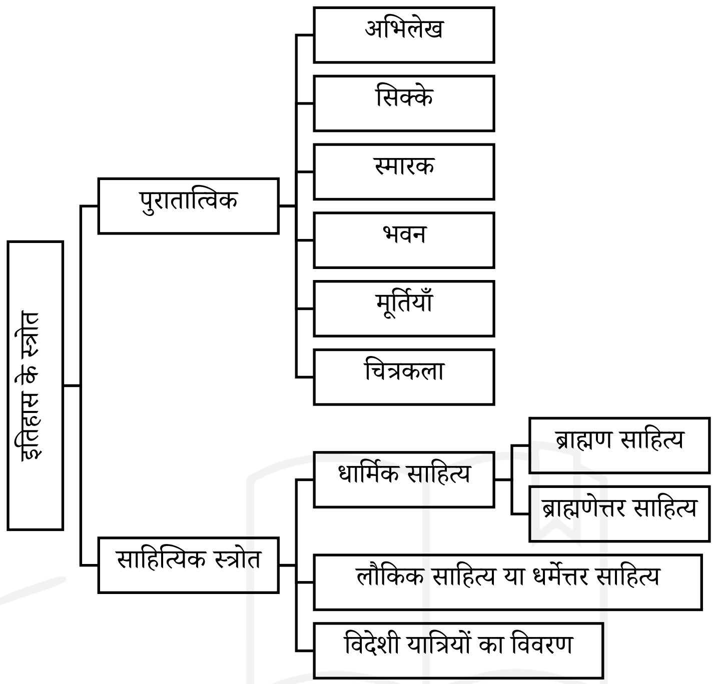

पुरातात्विक स्रोत

प्राचीन भारत के इतिहास के अध्ययन में पुरातात्विक स्रोतों को सर्वाधिक **प्रामाणिक एवं विश्वसनीय** माना जाता है। इन स्रोतों के माध्यम से हमें तत्कालीन राजनीतिक, सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक जीवन की प्रत्यक्ष जानकारी प्राप्त होती है। पुरातात्विक स्रोतों के अंतर्गत मुख्यतः **अभिलेख, सिक्के, मूर्तियाँ, स्मारक, भवन, स्तूप, चित्रकला तथा अवशेष (मुहरें आदि)** शामिल किए जाते हैं।

1. अभिलेख

- पुरातात्विक स्रोतों में अभिलेख सबसे महत्वपूर्ण साधन हैं। पत्थरों की शिलाओं, स्तम्भों, ताम्रपत्रों, दीवारों एवं प्रतिमाओं पर उत्कीर्ण लेखों को अभिलेख कहा जाता है।
- अभिलेखों के अध्ययन को **एपिग्राफी** कहा जाता है।

प्रमुख विशेषताएँ

- भारत के अब तक ज्ञात **सबसे प्राचीन अभिलेख मौर्य शासक अशोक** से संबंधित हैं, जिनकी तिथि लगभग **300 ई.पू.** मानी जाती है।
- अशोक के अभिलेखों से उसके **धर्म, नैतिक आदर्शों और राजकीय दृष्टिकोण** पर प्रकाश पड़ता है। अधिकांश अशोक अभिलेख **ब्राह्मी लिपि** में हैं, जबकि उत्तर-पश्चिम भारत के कुछ अभिलेख **खरोष्ठी लिपि** में मिलते हैं, जो दाईं से बाईं ओर लिखी जाती थी। **1837 ई. में जेम्स प्रिंसेप** ने पहली बार ब्राह्मी लिपि में लिखे अशोक के अभिलेखों को पढ़ने में सफलता प्राप्त की।
- गुप्त काल से पूर्व के अभिलेख सामान्यतः **प्राकृत भाषा** में हैं, जबकि गुप्त एवं गुप्तोत्तर काल में **संस्कृत भाषा** का व्यापक प्रयोग हुआ।

स्मरणीय प्रमुख अभिलेख

- **हाथीगुम्फा अभिलेख** – खारवेल के शासनकाल की घटनाओं का क्रमबद्ध विवरण
- **जूनागढ़ (गिरनार) अभिलेख** – रुद्रदमन की विजयों एवं व्यक्तित्व का वर्णन
- **नासिक अभिलेख** – सातवाहन शासक गौतमीपुत्र सातकर्णी की सैन्य उपलब्धियाँ

- **प्रयाग स्तम्भ लेख (प्रशस्ति)** – समुद्रगुप्त की दिग्विजय नीति का विवरण
- **मन्दसौर अभिलेख** – यशोधर्मन की सैनिक सफलताएँ
- **एहोल अभिलेख** – पुलकेशिन द्वितीय और हर्ष के युद्ध का वर्णन
- **ग्वालियर अभिलेख** – गुर्जर-प्रतिहार शासकों, विशेषतः भोज, की जानकारी
- **देवपाड़ा अभिलेख** – बंगाल शासक विजयसेन के शासन की घटनाएँ

2. सिक्के

- सिक्कों के अध्ययन को **न्यूमिसमैटिक्स** कहा जाता है। सिक्के आर्थिक इतिहास के साथ-साथ राजनीतिक सत्ता, धर्म और व्यापारिक संबंधों को समझने में सहायक होते हैं।
- प्राचीन भारत में सिक्के **तांबा, चांदी, सोना और सीसा** धातुओं से बनाए जाते थे।
- प्रारम्भिक सिक्कों पर केवल **चिह्न** होते थे, जबकि बाद के सिक्कों पर **राजाओं, देवताओं, तिथियों और लेख** का अंकन मिलने लगता है।
- भारत के **सबसे प्राचीन सिक्के आहत या पंचमार्क सिक्के** हैं, जिनकी तिथि लगभग **5वीं शताब्दी ई.पू.** है। ये सिक्के ठप्पा मारकर बनाए जाते थे और इन पर पेड़, मछली, सांड, हाथी, अर्धचंद्र आदि चिह्न अंकित होते थे। आहत सिक्कों की प्राचीनतम निधियाँ **मगध और पूर्वी उत्तर प्रदेश** से प्राप्त हुई हैं।
- **सातवाहन शासकों ने सीसे के** तथा **गुप्त शासकों ने स्वर्ण सिक्कों** का व्यापक प्रचलन किया।
- हिन्द-यूनानी शासकों ने भारत में **पहला स्वर्ण सिक्का** प्रचलित किया।

3. मूर्तिकला

मूर्तियों के माध्यम से तत्कालीन कला, धर्म और समाज की सजीव झलक मिलती है।

- **कुषाण काल की गांधार कला** पर विदेशी (यूनानी) प्रभाव स्पष्ट दिखाई देता है।
- **मथुरा कला** पूर्णतः स्वदेशी परंपरा पर आधारित थी।
- **भरहुत, बोधगया और अमरावती** की मूर्तियों में सामान्य जन-जीवन का यथार्थ चित्रण मिलता है।

4. स्मारक, भवन एवं स्तूप

- प्राचीन स्मारक और स्थापत्य अवशेष वास्तुकला के विकास को समझने में सहायक हैं।
- मंदिर स्थापत्य की तीन प्रमुख शैलियाँ हैं –
  - ✓ **नागर शैली** (उत्तर भारत)
  - ✓ **द्राविड़ शैली** (दक्षिण भारत)
  - ✓ **वेसर शैली** (दक्षिण पथ/मध्य क्षेत्र)
- **साँची, सारनाथ और अमरावती** जैसे स्तूप बौद्ध स्थापत्य के उत्कृष्ट उदाहरण हैं।
- **हड़प्पा और मोहनजोदड़ो** के नगर अवशेष विकसित नगरीय योजना को दर्शाते हैं।
- **नालन्दा** के अवशेष प्राचीन शिक्षा प्रणाली की उन्नति को प्रमाणित करते हैं।
- दक्षिण-पूर्व एशिया और मध्य एशिया में प्राप्त मंदिर एवं स्तूप भारतीय संस्कृति के **विदेशों में प्रसार** का संकेत देते हैं।

5. चित्रकला

- चित्रकला से उस समय के सामाजिक जीवन, भावनाओं और कलात्मक स्तर की जानकारी मिलती है।
- **अजन्ता की गुफाओं के चित्र** मानवीय संवेदनाओं की अत्यंत सशक्त अभिव्यक्ति प्रस्तुत करते हैं।
- **'माता और शिशु'** तथा **'मरणासन्न राजकुमारी'** जैसे चित्र गुप्तकालीन कला की उत्कृष्टता को दर्शाते हैं।

6. अवशेष एवं मुहरें

- अवशेषों में प्राप्त **मुहरें** प्राचीन इतिहास के पुनर्निर्माण में अत्यंत सहायक हैं।
- **हड़प्पा और मोहनजोदड़ो** की मुहरों से धार्मिक विश्वासों की जानकारी मिलती है।
- **बसाढ़** से प्राप्त मिट्टी की मुहरें व्यापारिक श्रेणियों और आर्थिक गतिविधियों को दर्शाती हैं।

साहित्यिक स्त्रोत

प्राचीन भारत के इतिहास के अध्ययन में साहित्यिक स्रोतों का विशेष महत्व है। इन स्रोतों से हमें तत्कालीन **धार्मिक विश्वासों, सामाजिक व्यवस्था, राजनीतिक परिस्थितियों, सांस्कृतिक विकास तथा बौद्धिक चेतना** की जानकारी प्राप्त होती है। प्राचीन भारतीय साहित्य को व्यापक रूप से **धार्मिक साहित्य** और **धर्मेत्तर (लौकिक) साहित्य** में वर्गीकृत किया जाता है।

धार्मिक साहित्य

धार्मिक साहित्य वह साहित्य है, जिसका संबंध किसी न किसी धर्म या धार्मिक परंपरा से होता है। इसे पुनः **ब्राह्मण साहित्य** तथा **ब्राह्मणेत्तर साहित्य** में विभाजित किया जा सकता है।

1. ब्राह्मण साहित्य

- ब्राह्मण साहित्य में वे ग्रंथ सम्मिलित हैं, जो मुख्यतः **वैदिक धर्म एवं ब्राह्मण परंपरा** से संबंधित हैं। इन ग्रंथों के माध्यम से तत्कालीन धार्मिक अनुष्ठानों, दार्शनिक विचारों और सामाजिक मूल्यों की जानकारी मिलती है।
- ब्राह्मण साहित्य के प्रमुख ग्रंथ हैं—
  - ✓ **वेद** – ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद
  - ✓ **वेदांग** – शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, छंद और ज्योतिष
  - ✓ **उपनिषद** – आत्मा, ब्रह्म और मोक्ष संबंधी दार्शनिक चिंतन
  - ✓ **रामायण एवं महाभारत** – धार्मिक एवं नैतिक आदर्शों का प्रस्तुतीकरण
  - ✓ **पुराण** – सृष्टि, वंशावली और धार्मिक कथाएँ
  - ✓ **स्मृति ग्रंथ** – सामाजिक एवं विधिक नियमों का वर्णन

2. ब्राह्मणेत्तर साहित्य

- ब्राह्मणेत्तर साहित्य में वे ग्रंथ आते हैं, जो ब्राह्मण धर्म से इतर धार्मिक परंपराओं से संबंधित हैं। इसमें मुख्यतः **बौद्ध और जैन साहित्य** शामिल हैं।

a. बौद्ध साहित्य

- ✓ बौद्ध साहित्य से बौद्ध धर्म के सिद्धांतों, संघ व्यवस्था और ऐतिहासिक घटनाओं की जानकारी मिलती है। इसके अंतर्गत प्रमुख ग्रंथ हैं—
- ✓ **त्रिपिटक** (विनय, सुत्त और अभिधम्म पिटक)
- ✓ **दीपवंश एवं महावंश** – बौद्ध इतिहास से संबंधित ग्रंथ
- ✓ **मिलिन्दपन्हो** – राजा मिलिंद और नागसेन के संवाद
- ✓ **बुद्धचरित** – गौतम बुद्ध का जीवन वृत्तांत

b. जैन साहित्य

- ✓ जैन साहित्य से जैन धर्म के सिद्धांतों, तीर्थंकरों और नैतिक नियमों की जानकारी मिलती है। इसके प्रमुख ग्रंथ हैं - **आगम ग्रंथ, कल्पसूत्र, भगवतीसूत्र, परिशिष्ट पर्व**

धर्मेत्तर (लौकिक) साहित्य

- धर्मेत्तर या लौकिक साहित्य का संबंध किसी विशेष धर्म से नहीं होता है। यह साहित्य ऐतिहासिक घटनाओं, प्रशासन, भाषा-विज्ञान, राजनीति तथा व्यक्तित्वों के जीवन पर आधारित होता है।
- लौकिक साहित्य के अंतर्गत निम्न प्रकार के ग्रंथ आते हैं - **ऐतिहासिक ग्रंथ, जीवनियाँ, कल्पना प्रधान साहित्य**
- प्रमुख धर्मेत्तर ग्रंथ हैं -
- **अर्थशास्त्र** – कौटिल्य द्वारा रचित, जिसमें शासन और प्रशासन की विस्तृत जानकारी मिलती है
- **अष्टाध्यायी** – पाणिनि द्वारा रचित, संस्कृत व्याकरण का आधार ग्रंथ
- **राजतरंगिणी** – कल्हण द्वारा लिखित, कश्मीर का इतिहास
- **हर्षचरित** – बाणभट्ट द्वारा रचित, सम्राट हर्ष का जीवनवृत्त

विदेशी यात्रियों का विवरण :

विदेशी यात्री	देश	काल / शासक	प्रमुख ग्रंथ	भारत संबंधी प्रमुख विवरण
मेगस्थनीज	यूनान	चंद्रगुप्त मौर्य	इंडिका	मौर्य प्रशासन, समाज, भूगोल का वर्णन
डाइमेकस	यूनान	बिंदुसार	—	मेगास्थनीज के विवरणों की पुष्टि
फाह्यान	चीन	चंद्रगुप्त द्वितीय	बौद्ध राज्यों का वृत्तांत	गुप्तकालीन धार्मिक व सामाजिक जीवन
ह्वेनसांग	चीन	हर्षवर्धन	ग्रेट टैंग रिकॉर्ड्स ऑन द वेस्टर्न रीजन्स	राजनीति, धर्म, नालंदा का वर्णन
आई-त्सिंग	चीन	चालुक्य–पल्लव काल	—	बौद्ध मठ, नियम व भिक्षु जीवन

Toppers Notes Unleash the topper in you

अल-बरुनी	फारस	महमूद गजनवी	तहकीक-ए-हिंद	भारतीय विज्ञान, समाज व संस्कृति
अल-मसूदी	अरब	10वीं शताब्दी	मेडोज ऑफ गोल्ड	समुद्री व्यापार, धर्म व समाज
मार्को पोलो	इटली	13वीं शताब्दी	—	दक्षिण भारत का व्यापार व समृद्धि
इब्न बतूता	मोरक्को	मुहम्मद बिन तुगलक	रिहला	दिल्ली सल्तनत का प्रशासन
निकोलो डे कोंटी	इटली	देव राय I–II	—	विजयनगर की भव्यता व समाज
अब्दुर रज्जाक	फारस	ज़मोरिन	यात्रा वृत्तांत	कालीकट का बंदरगाह व समुद्री व्यापार
अथानासियस निकितिन	रूस	15वीं शताब्दी	ट्रेवल्स ऑफ निकितिन	व्यापार, राजनीति व सामाजिक जीवन
दुआर्टे बारबोसा	पुर्तगाल	16वीं शताब्दी	—	जाति व्यवस्था, केरल व गोवा
डोमिंगो पायस	पुर्तगाल	कृष्णदेव राय	—	विजयनगर की शक्ति व वैभव
फर्नाओ नुनिज़	पुर्तगाल	अच्युत देव राय	—	त्योहार, महिलाओं की स्थिति
जीन-बैप्टिस्ट टैवर्नियर	फ्रांस	शाहजहाँ–औरंगजेब	यात्रा विवरण	हीरा व्यापार, मुगल अर्थव्यवस्था
फ़्रांस्वा बर्नियर	फ्रांस	औरंगजेब	ट्रैवल्स इन द मुगल एम्पायर	मुगल समाज व राजनीति की आलोचना

Toppersnotes
Unleash the topper in you

2 CHAPTER प्रागैतिहासिक काल

अतीत के अध्ययन का काल-विभाजन

प्रागैतिहासिक काल

- जिस काल के विषय में कोई भी लिखित विवरण उपलब्ध नहीं होता, उसे प्रागैतिहासिक काल कहा जाता है। इस काल में मानव लिपि अथवा लेखन कला से अपरिचित था।
- मानव उत्पत्ति से लेकर लगभग **3000 ई.पू.** तक का समय इस काल के अंतर्गत आता है।
- भारत की सभ्यता एवं संस्कृति की नींव इसी काल में पड़ी।
- इस काल का अध्ययन **पाषाण काल** और **ताम्रपाषाण काल** के माध्यम से किया जाता है।

आद्य-ऐतिहासिक (प्रोटो-हिस्टोरिक) काल

- इस काल में मानव किसी न किसी प्रकार की लिपि से परिचित तो था, लेकिन वह लिपि अभी तक पढ़ी नहीं जा सकी है।
- इस श्रेणी में मुख्यतः **हड़प्पा सभ्यता** तथा **वैदिक सभ्यता** को रखा जाता है।

ऐतिहासिक काल

- जिस काल के मानव की गतिविधियों का लिखित विवरण उपलब्ध हो और वह पढ़ा जा चुका हो, उसे ऐतिहासिक काल कहा जाता है।
- लगभग **5वीं शताब्दी ई.पू. से वर्तमान** तक का काल इसी के अंतर्गत आता है।

प्रागैतिहासिक काल

- प्रागैतिहासिक संस्कृतियाँ मानव विकास का आधार रहीं। मानव सभ्यता के प्रारम्भिक इतिहास को तीन प्रमुख चरणों में विभाजित किया गया है—

1. पुरापाषाण काल
2. मध्यपाषाण काल
3. नवपाषाण काल

- भारत में **1863 ई.** में प्रागैतिहासिक संस्कृति की खोज हुई।
- **राबर्ट ब्रूस फुट**, एक भू-वैज्ञानिक, ने मद्रास के निकट **पल्लवरम** से पहला पुरापाषाणकालीन उपकरण खोजा।

पुरापाषाण काल (लगभग 5 लाख ई.पू. – 10 हजार ई.पू.)

- यह मानव इतिहास का सबसे प्राचीन चरण है। इस काल में मानव का जीवन **अस्थिर** था तथा आजीविका का मुख्य साधन **आखेट (शिकार)** और **खाद्य संग्रह** था।

प्रमुख विशेषताएँ

- मानव पूर्णतः शिकारी एवं खाद्य संग्राहक था।
- पत्थर के मोटे और अपरिष्कृत औजारों का प्रयोग होता था।
- **भीमबेटका (भोपाल के निकट)** से प्रागैतिहासिक चित्रित गुफाएँ एवं शैलाश्रय प्राप्त हुए हैं।
- सोहन संस्कृति का संबंध इसी काल से माना जाता है।

पुरापाषाण काल का आंतरिक विभाजन

a. निम्न पुरापाषाण काल

- ✓ प्रमुख उपकरण: **हैंड ऐक्स, चॉपर-चॉपिंग, पेबुल उपकरण**
- ✓ मानव जीवन अत्यंत अस्थिर था।
- ✓ इस काल की दो प्रमुख संस्कृतियाँ—
  - **चॉपर-चॉपिंग पेबुल संस्कृति**: सोहन नदी घाटी (पाकिस्तान) → सोहन उद्योग
  - **हैंड ऐक्स संस्कृति**: अत्तिरमपक्कम (मद्रास के पास) → एश्यूलन / मद्रासी संस्कृति

b. मध्य पुरापाषाण काल

- ✓ पत्थर के **फलक (ब्लेड)** आधारित उपकरणों का निर्माण
- ✓ इसलिए इसे **फलक संस्कृति** कहा जाता है।
- ✓ प्रमुख उपकरण: स्क्रेपर, बेधक, बेधनियाँ
- ✓ गंगा घाटी, असम, सिक्किम और केरल को छोड़कर लगभग पूरे भारत से साक्ष्य प्राप्त

c. उच्च पुरापाषाण काल

- ✓ **होमो सेपियंस (ज्ञानी मानव)** का उदय
- ✓ विशिष्ट उपकरण: **तक्षनी**, चाकू, स्क्रेपर, बेधक
- ✓ इलाहाबाद जिले के **लोहंदा (बेलन घाटी)** से हड्डी की बनी नारी मूर्ति प्राप्त
- ✓ मानव ने पहली बार **गुफाओं में निवास** शुरू किया
- ✓ **भीमबेटका** की गुफाओं से इस काल की आवासीय एवं चित्रकारी के प्रमाण
- ✓ मानव ने सर्वप्रथम **चित्रकला** की शुरुआत की

मध्यपाषाण काल (लगभग 10 हजार ई.पू. – 4 हजार ई.पू.)

- ➢ यह काल पुरापाषाण और नवपाषाण काल के बीच का **संक्रमण काल** था तथा नवपाषाण काल का अग्रदूत माना जाता है।

प्रमुख विशेषताएँ

- ➢ जलवायु गर्म हुई, घास के मैदान विकसित हुए
- ➢ औजार छोटे, परिष्कृत एवं तीक्ष्ण हुए
- ➢ **सूक्ष्म पाषाण उपकरण (माइक्रोलिथ)** इस काल की विशेषता थे
- ➢ प्रमुख उपकरण: तीर की नोक, इकधार फलक, चाकू, तक्षनी, अर्धचंद्राकार औजार
- ➢ मानव ने **पशुपालन** आरंभ किया
- ➢ सबसे पहले **कुत्ते को पालतू** बनाया गया
- ➢ पशुपालन के प्राचीनतम साक्ष्य:
  - ✓ **आदमगढ़ (म.प्र.)**
  - ✓ **बागौर (राजस्थान)** — लगभग 5000 ई.पू.
- ➢ सबसे प्राचीन मध्यपाषाण स्थल:
  1. **सराय नाहर राय**
  2. **महदहा (प्रतापगढ़)**
- ➢ इसी काल में **मानव कंकालों** के प्रथम साक्ष्य मिलते हैं

नवपाषाण काल (लगभग 7 हजार ई.पू. – 1 हजार ई.पू.)

- ➢ कालक्रम की दृष्टि से यह काल छोटा था, लेकिन मानव इतिहास के सबसे **क्रांतिकारी परिवर्तन** इसी युग में हुए।

प्रमुख विशेषताएँ

- ➢ इसे **कृषि क्रांति का काल** कहा जाता है
- ➢ मानव ने **कृषि, पशुपालन और स्थायी निवास** अपनाया
- ➢ चाक, पहिया और आग का व्यवस्थित उपयोग प्रारम्भ हुआ
- ➢ भोजन पकाने और संग्रह हेतु **कुम्हारी (मृद्भांड निर्माण)** का विकास

प्रमुख स्थल एवं तथ्य

- ➢ विश्व में नवपाषाण संस्कृति का प्रारम्भ: **पश्चिम एशिया (लगभग 9000 ई.पू.)**
- ➢ प्राचीनतम नवपाषाण बस्ती:
  - ✓ **मेहरगढ़ (पाकिस्तान):-** यहाँ 7000 ई.पू. में कृषि के स्पष्ट प्रमाण
- ➢ भारत में चावल की खेती का प्राचीनतम प्रमाण: **कोल्डिहवा** (लगभग 5000 ई.पू.)
- ➢ **कश्मीरी नवपाषाण संस्कृति: बुर्जहोम**
  - ✓ गड्ढे वाले मकान
  - ✓ मानव के साथ **कुत्ते को दफनाने** का प्रमाण

ताम्र-पाषाण काल

- ➢ जिस काल में मानव ने **पत्थर के औजारों के साथ-साथ ताँबे के औजारों** का प्रयोग प्रारम्भ किया, उसे **ताम्र-पाषाण काल** कहा जाता है।
- ➢ ताँबा मानव द्वारा प्रयोग में लाई गई **पहली धातु** थी, परन्तु इस काल में पत्थर के औजारों का प्रयोग पूर्णतः समाप्त नहीं हुआ।

ताम्र-पाषाण काल की प्रमुख विशेषताएँ

- ➢ पत्थर और ताँबे दोनों के औजारों का समानांतर प्रयोग
- ➢ कृषि और पशुपालन का अधिक विकसित स्वरूप
- ➢ स्थायी बस्तियों का विकास
- ➢ **चित्रित मृद्भाण्डों** का प्रयोग सर्वप्रथम इसी काल में
- ➢ मृद्भाण्ड निर्माण कला में उल्लेखनीय उन्नति
- ➢ ग्रामीण जीवन और क्षेत्रीय संस्कृतियों का विकास

ToppersNotes Unleash the topper in you

पूर्व-सैंधव ताम्र-पाषाणिक संस्कृतियाँ

संस्कृति का नाम	क्षेत्र	प्रमुख विशेषताएँ
क्वेटा संस्कृति	बलूचिस्तान	पांडुरंग (भूरे रंग) के मृद्भाण्डों का प्रयोग
कुल्ली संस्कृति	बलूचिस्तान	पांडुरंग लेप पर काले रंग से चित्रण वाले मृद्भाण्ड
नाल-आर्मी संस्कृति	बलूचिस्तान एवं सिंध	पांडुरंग लेप पर बहुरंगी अलंकरण वाले मृद्भाण्ड
झोब संस्कृति	बलूचिस्तान	लाल रंग के लेप पर काले रंग से चित्रण वाले मृद्भाण्ड
कोटदीजी संस्कृति	सिंध	लाल लेप पर दुधिया रंग की पट्टी तथा बहुरंगी अलंकरण
पूर्व-हड़प्पा संस्कृति	पंजाब (पाकिस्तान)	लाल या बैंगनी लेप पर काली धारियों वाले मृद्भाण्ड

भारत की प्रमुख ताम्र-पाषाणिक संस्कृतियाँ एवं स्थल

संस्कृति	प्रमुख स्थल	मुख्य विशेषताएँ
आहड़ संस्कृति	आहड़ (राजस्थान)	सबसे प्रमुख ताम्र-पाषाणिक संस्कृति, प्राचीन नाम **ताम्रवती**
मालवा संस्कृति	नवदाटोली	कृषि फसलों के प्रमाण, उत्कृष्ट मृद्भाण्ड
जोरवे संस्कृति	इनामगाँव, दैमाबाद	इनामगाँव सबसे बड़ी बस्ती, दैमाबाद से काँसे की वस्तुएँ

Toppersnotes
Unleash the topper in you

3
CHAPTER

सिन्धु घाटी सभ्यता

- यह दक्षिण-पश्चिम एशिया के उत्तर-पश्चिमी भाग में स्थित एक कांस्य युग की सभ्यता थी।
- मिस्र और मेसोपोटामिया के साथ सिंधु घाटी सभ्यता विश्व की तीन सबसे प्राचीन और व्यापक प्राचीन सभ्यताओं में से एक थी।
- हड़प्पा: खोज - सर्वप्रथम 1921 में पंजाब (पाकिस्तान) के हड़प्पा स्थान पर दयाराम साहनी द्वारा।
- ✓ हालाँकि 1872-73 में सर अलेक्जेंडर कनिंघम (ASI के महानिदेशक) द्वारा इसका प्रारंभिक अन्वेषण किया गया।
- **दक्षिण एशिया की पहली नगरीय संस्कृति;** उन्नत नगर नियोजन, वास्तुकला और सामाजिक संगठन के लिए जानी जाती है।
- **सभ्यता का विस्तार:** महाराष्ट्र में दैमाबाद (सबसे दक्षिण), उत्तर प्रदेश में आलमगीरपुर (सबसे पूर्व), पाकिस्तान में सुत्कांगेडोर (सबसे पश्चिम) और जम्मू में मांडा (सबसे उत्तर)।

<u>सिंधु घाटी सभ्यता के प्रमुख स्थल:</u>

स्थल, स्थान एवं नदी	**मुख्य विशेषताएँ**
हड़प्पा, पंजाब (पाकिस्तान), रावी नदी	➢ उत्खननकर्ता: जॉन ह्यूबर्ट मार्शल के अधीन दयाराम साहनी (1921)। ➢ यह सिंधु घाटी सभ्यता का खोजा गया पहला स्थल है जहाँ से पत्थर की पुरुष नृत्य मूर्ति (नटराज), दो कतारों में छह अनाज भंडार, लाल बलुआ पत्थर की पुरुष मूर्ति, पत्थर के लिंग और योनियाँ, मातृदेवी की मूर्तियाँ, पासे और समाधि संस्कृति के प्रमाण प्राप्त हुए।
मोहनजोदड़ो, सिंध (पाकिस्तान), सिंधु नदी	➢ उत्खननकर्ता: जॉन ह्यूबर्ट मार्शल के अधीन आर. डी. बनर्जी (1922) ➢ यहाँ से विशाल अन्नागार और विशाल स्नानागार (ईंटों से बने) के साथ पशुपति मुद्रा, पक्के स्नानागार, नृत्य करती युवती की कांस्य प्रतिमा (10.5 सेमी, त्रिभंग मुद्रा), पुरोहित राजा की मूर्ति (स्टियटाइट पत्थर), योजनाबद्ध दुर्ग और निम्न नगर, लगभग 700 कुएँ तथा दाह संस्कार के बाद दफ़नाने के प्रमाण आदि भी प्राप्त हुए।
चन्हूदड़ो, सिंध (पाकिस्तान), सिंधु नदी	➢ उत्खननकर्ता: एम. जी. मजुमदार (1931)। ➢ यह स्थल सिंधु सभ्यता का प्रमुख हस्तशिल्प केंद्र था — यहाँ से मनके बनाने, सीप काटने, मुद्राएँ और बाट (भार मापन) बनाने के प्रमाण मिले। साथ ही कुत्ते के पंजे के निशान, मिट्टी की बैलगाड़ी और कांस्य की खिलौना गाड़ी भी मिली।
लोथल, गुजरात, भोगवा–साबरमती संगम	➢ उत्खननकर्ता: एस. आर. राव (1954–63)। ➢ यह सिंधु सभ्यता का प्रमुख बंदरगाह नगर था — यहाँ गोदी (dockyard), धान की भूसी के अवशेष (धान की खेती का प्रमाण), मेसोपोटामिया से व्यापार, दोहरा शवाधान, मनके बनाने के कारखाने, हाथी-दाँत की स्केल, नाव , अग्नि-वेदी और कार्नेलियन पत्थर आदि मिले।
सुरकोटड़ा, गुजरात, शादी कौर नदी	➢ उत्खननकर्ता: जे. पी. जोशी (1964)। ➢ यहाँ अंडाकार एवं बर्तनयुक्त-कब्रें और घोड़े की अस्थियों के प्रमाण मिले।

कालीबंगा, राजस्थान, दृशद्वती (घग्गर/सरस्वती नदी)	➢ उत्खननकर्ता: अमलानंद घोष (1953); बी. बी. लाल (1960 के दशक)। ➢ यहाँ चूड़ी कारखाना, जोते हुए खेत का साक्ष्य, ऊँट की अस्थियाँ, अग्नि-वेदी, गेहूँ और जौ के लिए क्रॉस-फरो (आड़े-टेढ़े खेत), पकी हुई ईंटों की नालियाँ और ताँबे की वस्तुएँ मिली।
बनावली, हरियाणा, रंगोई	➢ उत्खननकर्ता: आर. एस. बिष्ट (1974–77)। ➢ यह पूर्व-हड़प्पा और उत्तर-हड़प्पा, दोनों चरणों का प्रतिनिधित्व करता है। यहाँ जौ के दाने, लाजवर्द (लैपिस लाजुली), अग्नि-वेदी, वृत्ताकार सड़कें और मिट्टी के हल मिले।
धोलावीरा, गुजरात (कच्छ), मानहर एवं मंसर (लूणी बेसिन)	➢ उत्खननकर्ता: जे. पी. जोशी (1967); आर. एस. बिष्ट (1990–2005)। ➢ यूनेस्को विश्व धरोहर स्थल (2021)। ➢ यहाँ पत्थर के जलाशय, अभिलेखित सूचनापट्ट, प्रथम ज्ञात खगोलीय वेधशाला और तीन भागों (दुर्ग, मध्य नगर तथा निम्न नगर) वाला नगर विन्यास पाया गया।
रोपड़ (रूपनगर), पंजाब, सतलुज नदी	➢ उत्खननकर्ता: वाई. डी. शर्मा (1953)। ➢ यह स्वतंत्रता के बाद पहला उत्खनित सिंधु सभ्यता स्थल था। यहाँ कुत्ते और मनुष्य का संयुक्त शवाधान तथा ताँबे की कुल्हाड़ी मिली।
सुत्कांगेडोर, बलूचिस्तान (पाकिस्तान), दश्त नदी	➢ उत्खननकर्ता: ऑरेल स्टीन (1927)। ➢ यहाँ राख से भरा पात्र, ताँबे की कुल्हाड़ी, मिट्टी के बर्तन मिले और यह मेसोपोटामिया के साथ व्यापार हेतु बंदरगाह के रूप में कार्य करता था।
राखीगढ़ी, हरियाणा	➢ उत्खननकर्ता: अमरेन्द्र नाथ (1997); दक्कन कॉलेज (2011–16)। ➢ यह सिंधु सभ्यता का सबसे बड़ा स्थल है — यहाँ प्रारंभिक, परिपक्व और उत्तर हड़प्पा तीनों चरणों के प्रमाण मिले है तथा योजनाबद्ध आवास, कालीबंगा जैसे मिट्टी के बर्तन और बच्चों के 'पिट्ठू' (हॉपस्कॉच) खेल के चिन्ह मिले।
रंगपुर, गुजरात, मदार नदी	➢ उत्खननकर्ता: एस. आर. राव (1931; 1953–54)। ➢ यहाँ हड़प्पा-पूर्व और हड़प्पा-कालीन अवशेष, पीले-धूसर रंग के बर्तन और धान की खेती के साक्ष्य मिले।
आलमगीरपुर, उत्तर प्रदेश, हिंडन (यमुना की सहायक) नदी	➢ उत्खननकर्ता: वाई. डी. शर्मा (1958)। ➢ उत्तर-हड़प्पा काल का स्थल जहाँ ताँबे की धारदार ब्लेड और एक पात्र पर कपड़े की छाप मिली।
कोटदीजी, सिंध (पाकिस्तान)	➢ उत्खननकर्ता: एफ. ए. खान (1955)। ➢ पूर्व-हड़प्पा स्थल — यहाँ किलेबंदी, सींग वाले देवता की आकृतियों के साथ लाल एवं हल्के पीले बर्तन मिले है।
आमरी, सिंध (पाकिस्तान), सिंधु नदी	➢ उत्खननकर्ता: एन. जी. मजुमदार (1929)। ➢ पूर्व-हड़प्पा संक्रमणकालीन संस्कृति का स्थल — यहाँ से `गैंडे के अवशेष मिले।
दैमाबाद, महाराष्ट्र, प्रवरा (गोदावरी की सहायक) नदी	➢ उत्खननकर्ता: बी. पी. बोपार्डिकर (1958); एस. आर. राव (1974–75)। ➢ यहाँ कांस्य निर्मित रथ, बैल, हाथी और गैंडे की प्रतिमाएँ मिली।
इनामगाँव, महाराष्ट्र (पुणे जिला), घोड़ नदी (भीमा की सहायक)	➢ उत्खननकर्ता: एच. डी. सांकलिया (1968–82, दक्कन कॉलेज)। ➢ ताम्रपाषाणकालीन स्थल — यहाँ से गेहूँ, जौ, मसूर की खेती, सिंचाई नहर, मिट्टी के घर, उत्तरमुखी शवदाह और बच्चों को घर के भीतर दफ़नाने के प्रमाण मिले है।

नागेश्वर, गुजरात (जामनगर के पास, सौराष्ट्र तट), अरब सागर तट	➢ उत्खननकर्ता: एस. आर. राव (1955)। ➢ यह सीप-कार्य का केंद्र और तटीय बस्ती थी — यहाँ से मनके, चूड़ियाँ, आभूषण और मेसोपोटामिया से व्यापार के प्रमाण मिले।
शोर्तुगई, अफगानिस्तान, ऑक्सस (अमू दरिया)	➢ उत्खननकर्ता: फ्रेंच पुरातत्व मिशन (1970 का दशक, हेनरी-पॉल फ्रेंकफर्ट)। ➢ सिंधु सभ्यता का सबसे उत्तरी स्थल — यहाँ लाजवर्द व्यापार (बदख्शां की खान से), कार्नेलियन और फ़िरोज़ा मनके तथा भंडारण पात्र मिले।
भिर्राणा, फतेहाबाद जिला, हरियाणा, सरस्वती	➢ उत्खननकर्ता: आर. एस. बिष्ट (भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण, 2003–04)। ➢ यह सबसे प्राचीन सिंधु सभ्यता स्थल (~7570–6200 ई.पू.) है — यहाँ से पूर्व-हड़प्पा कालीन कृषि और मिट्टी के बर्तनों के प्रमाण मिले।

<u>सिंधु घाटी सभ्यता की विशेषताएँ:</u>

1. नगर नियोजन और अवसंरचना

- ✓ नगर आयताकार ग्रिड योजना के अनुसार बनाए गए थे, जिनमें सड़कें समकोण पर एक-दूसरे को काटती थी ।
- ✓ निर्माण कार्य में पकी हुई मिट्टी की ईंटों का उपयोग किया गया था, जिन्हें जिप्सम गारे से जोड़ा जाता था।
- ✓ निकासी प्रणाली भूमिगत थी, जो घरों को मुख्य सड़कों की नालियों से जोड़ती थी, जिससे उचित स्वच्छता बनी रहती थी।
- ✓ दुर्ग पश्चिमी भाग में मिट्टी की ईंटों के ऊँचे चबूतरे पर बनाया गया था और इसे निचले नगर से अलग रखा गया था।
- ✓ सड़कें चारों मुख्य दिशाओं में फैली थी जो सुव्यवस्थित नगर योजना को दर्शाती हैं।
- ✓ कालीबंगा में स्थित घरों में दीवार से घिरे कमरे होते थे, जिनमें बाहरी प्रवेशद्वार भी होता था और कभी-कभी उन्हें राहगीरों द्वारा उपयोग किया जाता था।
- ✓ अनाज भंडारण के लिए ईंटों के गोलाकार चबूतरे पर विशाल अन्नागार बनाए जाते थे।

2. कृषि

- ✓ मुख्य फसलें थी: गेहूँ (मुख्य आहार), चावल, बाजरा, जौ, मसूर, चना और तिल।
- ✓ मेहरगढ़ में लगभग 7000 वर्ष पूर्व कपास की खेती की जाती थी, जिससे यह विश्व की सबसे प्रारंभिक कपास उत्पादक सभ्यताओं में से एक बन जाती है।
- ✓ खेतों की जुताई के लिए लकड़ी के हल का उपयोग किया जाता था।
- ✓ पालतू पशुओं में बैल, भैंस, बकरी, भेड़, सुअर, कुत्ता, बिल्ली, गधा, कूबड़ वाले बैल और ऊँट शामिल थे जिन्हें कृषि कार्यों के लिए प्रयोग किया जाता था।

3. धार्मिक आस्थाएँ:

- ✓ लिंग, योनि और मातृदेवी की मूर्तियाँ धार्मिक प्रथाओं का संकेत देती हैं।
- ✓ कोई मंदिर नहीं मिला है, जिससे प्रतीत होता है कि पूजा प्रतिमाओं और मूर्तियों के माध्यम से की जाती थी।
- ✓ शावाधान प्रथाओं में लकड़ी के ताबूत (हड़प्पा), दोहरी कब्रें (लोथल), ईंटों के कक्ष (कालीबंगा) और बर्तनयुक्त-कब्रें (सुरकोटाड़ा) शामिल थी।
- ✓ कब्रों में मिट्टी के बर्तन, आभूषण, मनके और ताँबे के दर्पण आदि जैसी वस्तुएँ रखी जाती थी जो मृत्यु के बाद जीवन में विश्वास का संकेत देती हैं।

4. व्यापार और वाणिज्य

- ✓ हड़प्पावासियों ने मेसोपोटामिया (प्राचीन फारस/ईरान) जैसे क्षेत्रों के साथ व्यापार किया।
- ✓ व्यापार **वस्तु-विनिमय प्रणाली** पर आधारित था क्योंकि धातु मुद्रा का उपयोग नहीं होता था।
- ✓ निर्यात की वस्तुएँ ताँबा, सोना, कपास के वस्त्र, मनके और लाजवर्द थी जबकि आयात की वस्तुएँ सोना और टिन (अफगानिस्तान), जेड पत्थर (मध्य एशिया/चीन), ताँबा (ओमान/अफगानिस्तान) और फ़िरोज़ा (ईरान) आदि थी।
- ✓ नोट: हड़प्पावासी **लोहे** से परिचित नहीं थे।

Toppers Unleash the topper in you

5. **कला एवं शिल्प:**

- ✓ कांस्य ढलाई के लिए विलुप्त मोम तकनीक का उपयोग किया जाता था।
- ✓ पत्थर की मूर्तियों में दाढ़ी वाला पुरुष (स्टीटाइट, मोहनजोदड़ो) और पुरुष धड़ (लाल बलुआ पत्थर, हड़प्पा) शामिल हैं।

6. **मुहरें**

- ✓ मुहरें स्टियटाइट पत्थर/सेलखड़ी की बनी होती थी; प्रायः वर्गाकार (2×2 सेमी); मुख्यतः व्यापारिक उपयोग।
- ✓ इन पर लगभग 26 चिह्नों वाली लिपि अंकित थी; सबसे लंबी हड़प्पा मुहर मिली है।
- ✓ मुहरों पर **एक-सींग वाले गैंडे** और **कूबड़ वाले बैल** का चित्रांकन सबसे सामान्य था।
- ✓ **पशुपति मुहर** पर भैंसे के सींग वाला मुकुट पहने तथा पद्मासन में बैठे एक त्रि-मुखी देवता को दर्शाया गया है जिसके चारों ओर हाथी, बाघ, भैंस, गैंडा और दो हिरण है; यह धार्मिक प्रतीक के रूप में मानी जाती है।
- ✓ मेसोपोटामिया की मुहरें बेलनाकार थी, जिन पर मिट्टी से सतत आकृतियाँ बनी हुई थी।

7. **लिपि**

- ✓ हड़प्पा लिपि भारतीय उपमहाद्वीप की सबसे प्राचीन ज्ञात लिपि मानी जाती है किन्तु इसे अभी तक पढ़ा नहीं गया है।
- ✓ यह चित्रात्मक लिपि थी जिसमें लगभग 250–400 प्रतीक थे।
- ✓ यह **दाएँ से बाएँ** लिखी जाती थी।

सिंधु सभ्यता के पतन का कारण और संबंधित विद्वान	
पतन का कारण	**विद्वान**
जलवायु परिवर्तन	ऑरेल स्टीन, ए. एन. घोष
भूवैज्ञानिक परिवर्तन	एम. आर. साहनी
प्राकृतिक आपदा	के. यू. आर. केनेडी
बाढ़	मैकी और मार्शल
आर्य आक्रमण	गॉर्डन चाइल्ड और व्हीलर
पारिस्थितिक असंतुलन	फेयरसर्विस

Toppersnotes
Unleash the topper in you

4 CHAPTER वैदिक युग

- वैदिक सभ्यता सिंधु सभ्यता के बाद अस्तित्व में आई और इसे ऋग्वैदिक/प्रारंभिक वैदिक काल (1500–1000 ईसा पूर्व) तथा उत्तरवैदिक काल (1000–600 ईसा पूर्व) में विभाजित किया गया है।

वेद

- वेद शब्द 'विद्' (जानना) धातु से बना है जिसका अर्थ है 'ज्ञान'। वेद चार है: ऋग्वेद, सामवेद, यजुर्वेद और अथर्ववेद। वेदत्रयी शब्द ऋग्वेद, यजुर्वेद और सामवेद को संदर्भित करता है।

1. **ऋग्वेद**
   - ✓ ऋग्वेद सबसे प्राचीन वेद है और इसे "मानवता का प्रथम विधान" कहा गया है। इसमें ब्रह्मांड की उत्पत्ति का वर्णन है, भरत नामक कुल (जिससे बाद में भारत/इंडिया बना) का उल्लेख है और इसमें 1,028 सूक्त (10,580 ऋचाएँ) हैं, जिनमें 11 बालखिल्य सूक्त भी जोड़े गए हैं।
   - ✓ इसमें पहली बार "स्तूप" का उल्लेख मिलता है (प्रारंभिक ब्राह्मी लिपि में) तथा "निष्क" का भी उल्लेख मिलता है जो पहले गले का आभूषण था और बाद में सोने का सिक्का बन गया। इसमें विभिन्न धातुओं (अयस) का भी उल्लेख है।
   - ✓ ऋग्वेद से संबंधित पुरोहित को " होतृ" कहा जाता है।
2. **सामवेद**
   - ✓ सामवेद में कुल 1,810 मंत्र हैं, जिनमें अधिकांश ऋग्वेद से लिए गए हैं। इन्हें संगीतात्मक रूप में व्यवस्थित किया गया है, जिससे यह ऋग्वैदिक ऋचाओं का संगीतमय संस्करण बन जाता है। यह राग, रागिनी और ध्रुपद का आधार है।
   - ✓ इसे पूर्वार्चिक (6 उपविभाजन/आपाठक) और उत्तरार्चिक (9 उपविभाजन/प्रपाठक) में विभाजित किया गया है। सामवेद से संबंधित पुरोहित को "उद्गाता" कहा जाता है।
3. **यजुर्वेद**
   - ✓ यजुर्वेद को **"कर्मकांड वेद"** या यज्ञ प्रार्थनाओं का ग्रंथ कहा जाता है। यह वेद मुख्यतः अनुष्ठानों और यज्ञों पर केंद्रित है, इसमें लगभग 2,000 मंत्रों के साथ कुल 40 अध्याय हैं।
   - ✓ **दो प्रमुख ग्रंथ:**
     - कृष्ण यजुर्वेद: यह मंत्र (सूक्त) एवं पद्य का मिश्रण है।
     - शुक्ल (श्वेत) यजुर्वेद: इसमें गद्य रूप में भाष्य होता है।
   - ✓ इसका अंतिम अध्याय ईशोपनिषद है, जिसमें दार्शनिक और आध्यात्मिक विषयों की चर्चा की गई है, जबकि अन्य भागों में यज्ञों के नियम और विधियों का वर्णन है। इससे संबंधित पुरोहित "अध्वर्यु" कहलाता है और इसका उपवेद "धनुर्वेद" (धनुर्विद्या) है।
4. **अथर्ववेद**
   - ✓ अथर्ववेद चारों वेदों में सबसे अंतिम है और इसे "ब्रह्मवेद" या "अथर्वांगिरस वेद" भी कहा जाता है। इसमें कुल 731 सूक्त (~5,987 मंत्र) हैं, जिनमें लगभग 1,200 मंत्र ऋग्वेद से लिए गए हैं। इसमें ताबीज, जादुई प्रयोग और तंत्र-मंत्र संबंधी विधियाँ शामिल हैं जो जनसामान्य की आस्थाओं और बुरी शक्तियों से निपटने के उपायों को दर्शाते हैं।
   - ✓ यह 20 खण्डों (काण्ड) में विभाजित है और इसकी दो प्रमुख शाखाएँ हैं—शौनक और पैप्पलाद। प्रारंभ में यह वेदत्रयी (तीन मूल वेदों) का हिस्सा नहीं था।
   - ✓ इसमें "सभा" और "समिति" (जनसभा और परिषद) का भी उल्लेख मिलता है। इससे संबंधित पुरोहित को 'ब्रह्मा' कहा जाता है।

ब्राह्मण ग्रंथ

- ब्राह्मण ग्रंथ सरल गद्य में रचित होते हैं और इनका मुख्य केंद्र बिंदु यज्ञ होता है (ब्रह्मा = यज्ञ)। प्रत्येक वेद के साथ उसके अपने-अपने ब्राह्मण ग्रंथ जुड़े होते हैं।

वेद	ब्राह्मण ग्रंथ / विवरण	पुरोहित / टिप्पणी
ऋग्वेद	ऐतरेय ब्राह्मण (राज्याभिषेक विधि का वर्णन करता है), कौषीतकि ब्राह्मण	होतृ पुरोहितों द्वारा रचित
यजुर्वेद	तैत्तिरीय ब्राह्मण → कृष्ण यजुर्वेद से संबंधित शतपथ ब्राह्मण → शुक्ल यजुर्वेद से संबंधित (शतपथ ब्राह्मण अध्वर्यु पुरोहित याज्ञवल्क्य द्वारा रचित है)	—
सामवेद	तांड्य महाब्राह्मण, छांदोग्य (खादिर/खांडोग्य) ब्राह्मण, जैमिनीय ब्राह्मण	उद्गातृ पुरोहितों द्वारा रचित
अथर्ववेद	गोपथ ब्राह्मण	—

आरण्यक

➢ ये ब्राह्मण ग्रंथों का अंतिम भाग है; इनमें यज्ञ एवं योग सहित दार्शनिक तथा रहस्यात्मक विषयों की चर्चा है; इनका पठन वनों में किये जाने के कारण इन्हें "आरण्यक" कहा गया। कुल 7 आरण्यक उपलब्ध हैं: ऐतरेय, सांख्ययन, तैत्तिरीय, मैत्रायणी, मध्यंदिन, तलवाकार, जैमिनीय।

उपनिषद

➢ "उपनिषद" शब्द "उप + नि + सद्" से बना है जिसका अर्थ है— "गुरु के समीप बैठकर गुप्त ज्ञान प्राप्त करना"। कुल 108 उपनिषद (13 मुख्य) हैं जो वैदिक विचारों की आध्यात्मिक और तात्त्विक व्याख्या करने वाले दार्शनिक ग्रंथ है तथा ये बलि जैसे कर्मकांड की बजाय ज्ञान, ध्यान और त्याग पर बल देते है।

मुख्य उपनिषद:

➢ **बृहदारण्यक उपनिषद** → सबसे प्राचीन → इसमें याज्ञवल्क्य और गार्गी वाचकनवी के बीच दार्शनिक संवाद है।

➢ **मुण्डकोपनिषद** → सबसे विस्तृत; इसमें "सत्यमेव जयते" वाक्य का उल्लेख मिलता है।

➢ **छांदोग्यपनिषद** → इसमें पहले तीन आश्रमों की चर्चा होती है और ऋषि सत्यकाम जबाल की कथा वर्णित है।

➢ **कठोपनिषद** → यह नचिकेता और यम के बीच संवाद पर आधारित है।

वेदांग (वेदों के छह अंग) - उत्तर वैदिक काल

1. **शिक्षा** → मंत्रों का उच्चारण → मुख्य बल : सही उच्चारण पर।
2. **कल्प** → अनुष्ठान, कर्तव्य, संस्कार → मुख्य बल: बलिदान और समारोहों की प्रक्रिया।
3. **व्याकरण** → व्याकरण, भाषा विज्ञान → मुख्य बल: भाषा के नियम।
4. **निरुक्त** → व्युत्पत्ति → मुख्य बल: शब्दों की उत्पत्ति और अर्थ (प्रसिद्ध: यस्का का निरुक्त)।
5. **छंद** → मात्राएँ / काव्य संरचना → मुख्य बल: छंद, लय (पिंगल का छंदसूत्र)।
6. **ज्योतिष** → खगोल विज्ञान और कैलेंडर → मुख्य बल: अनुष्ठानों के लिए सूर्य, चंद्रमा, ग्रहों की गणना (ज्योतिष वेदांग - 400 छंद)

18 पुराण: ब्रह्मा, पद्म, विष्णु, शिव, भागवत, नारद, मार्कंडेय, अग्नि, भविष्य, ब्रह्म-वैवर्त्य, लिंग, वराह, स्कंद, वामन, कूर्म, मत्स्य, गरुड़, ब्रह्माण्ड।

प्रारंभिक/पूर्व वैदिक काल (1500-1000 ईसा पूर्व)

➢ इंडो-यूरोपीय भाषा बोलने वाले आर्य लोग अर्ध-घुमंतू पशुपालक थे जो प्रारंभिक संस्कृत बोलते थे (ये अवेस्ता, यूनानी और लैटिन से संबंधित थी)।

➢ इन्होंने लगभग 1500 ईसा पूर्व में खैबर दर्रे के माध्यम से कई चरणों में भारत में प्रवेश किया (कुछ ईरान के रास्ते, जैसा कि जेंद अवेस्ता में उल्लेख है)। 'आर्य' शब्द 'अर' (विदेशी/अजनबी) से व्युत्पन्न है। पहला ऐतिहासिक उल्लेख भगारकाई शांति संधि (1350 ई.पू.) में मिलता है जिसमें आर्य देवताओं वरुण, इंद्र, मित्र और नासत्य का उल्लेख है।

➢ आर्य सबसे पहले पंजाब क्षेत्र में बसे और बाद में पूर्व की ओर गंगा के मैदान तक फैल गए। अफगानिस्तान से पंजाब और पश्चिमी उत्तर प्रदेश तक का क्षेत्र सप्तसैंधव (सात नदियों की भूमि) कहलाता था, जिसमें सिंधु (इंडस), वितस्ता (झेलम), अस्किनी (चिनाब), परुष्णी (रावी), विपाशा (ब्यास), शुतुद्रि (सतलज) और सरस्वती (घग्गर–हकरा) नदियाँ शामिल थी।

- आर्य समाज की मूल इकाई 'कुल' (परिवार) थी। कई परिवार मिलकर ग्राम (गाँव) बनाते थे, जिसका मुखिया 'ग्रामणी' होता था। गाँव मिलकर विष (कुल या जिला) और कई विष मिलकर जन (जनजाति) बनाते थे, जिसका नेतृत्व राजन (मुखिया/राजा) करता था जो वंशानुगत होता था परंतु पूर्णतया नहीं क्योंकि यह सभा (बुजुर्गों की परिषद), समिति (सामान्य सभा) और विदथ (जनसभा) से परामर्श लेकर शासन करता था। सेनानी (सैन्य प्रमुख) सेना का नेतृत्व करता था, जनजाति की रक्षा करता था, बलि (उपहार/कर) प्राप्त करता था और पुजारी वर्ग का शक्तिशाली प्रभाव था जो राजा की शक्ति पर नियंत्रण रखते थे।
- आर्य पशुपालक थे जो संयुक्त परिवार में रहते थे, जिसका मुखिया गृहपति (पिता) होता था। महिलाओं को सम्मान प्राप्त था; वे नृत्य, कुश्ती और मुक्केबाजी में भाग लेती थी, उन्हें शिक्षा प्राप्त करने, मनपसंद का विवाह और पुनर्विवाह करने की स्वतंत्रता थी। अपाला, घोषा, विश्ववारा और लोपामुद्रा जैसी प्रसिद्ध विदुषी महिलाएँ इसी काल से संबंधित थी।

विवाह के प्रकार

विवाह का प्रकार	**मुख्य विशेषता**	**सामाजिक स्वीकृति**
ब्रह्म विवाह	कन्या को अच्छे चरित्र वाले विद्वान पुरुष को दान में देना; दहेज़ का चलन नहीं	सर्वाधिक स्वीकृत (आदर्श)
दैव विवाह	कन्या का विवाह यज्ञ के पुरोहित से दक्षिणा के रूप में किया जाता था	स्वीकृत
आर्ष विवाह	प्रतीकात्मक रूप से वर को एक गाय और एक बैल दिया जाता था (वधू मूल्य के रूप में)	स्वीकृत
प्रजापत्य विवाह	कर्तव्य और साहचर्य के आशीर्वाद के साथ विवाह	स्वीकृत
आसुर विवाह	धन या दहेज देकर वधू को खरीदा जाता था	अस्वीकृत
गंधर्व विवाह	आपसी प्रेम और सहमति से हुआ विवाह	अस्वीकृत किन्तु कम कठोरता
राक्षस विवाह	बलपूर्वक या अपहरण द्वारा विवाह (युद्धकाल में प्रचलित)	अस्वीकृत, किंतु क्षत्रियों के लिए अनुमेय
पैशाच विवाह	सोती हुई, नशे में या असहाय कन्या के साथ बलपूर्वक संबंध बनाकर विवाह करना	अत्यंत निंदनीय

आर्थिक जीवन

- आर्यों की अर्थव्यवस्था शुरू में पशुपालन पर आधारित थी जिसमें मवेशी ही धन का माप होते थे; बाद में गाँव बसने के साथ कृषि मुख्य व्यवसाय बन गया; मवेशी प्रजनन समृद्धि का संकेत देता था (धनवान व्यक्ति = गोमत) और ऋग्वेद के गव्युति और गोधूलि जैसे शब्द आर्थिक संदर्भों को दर्शाते हैं।

धर्म

- **मुख्य देवता:** इंद्र (पुरंदर, वृत्रहन; वर्षा, वज्र, युद्ध; लगभग 250 सूक्त), अग्नि (अग्नि, मध्यस्थ; लगभग 200 सूक्त), वरुण (ब्रह्मांडीय व्यवस्था/ऋत, जल, नैतिकता), सोम (देवीकृत पेय), रुद्र (तूफान, आरोग्यदाता), यम (मृत्यु), पूषन, विष्णु, मरुत।
- **देवियाँ:** अदिति (अनंत काल), उषा (भोर), सावित्री/गायत्री, सिनीवाली (उर्वरता), आख्यानी (वन)।
- नदियों में, वैदिक ग्रंथों में सबसे अधिक उल्लेख सरस्वती और सिंधु का है, जबकि गंगा को जाह्नवी और यमुना को अंशुमती कहा जाता था।

उत्तर वैदिक काल (1000-600 ईसा पूर्व)

- ऋग्वैदिकोत्तर स्रोत समाज, अर्थव्यवस्था, राजनीति और धर्म में परिवर्तन दर्शाते है। आर्य 1500-800 ईसा पूर्व और 500 ईसा पूर्व तक गंगा और यमुना के मैदानों में फैल गए, जो शुरू में पंजाब में थे।

राजनीतिक व्यवस्था

- प्रारंभिक जनजातीय बस्तियाँ वंशानुगत राजशाहियों और गणराज्यों के उदय के साथ शक्तिशाली राज्यों में परिवर्तित हो गईं। राजस्व संग्रह और श्रम-नियोजन ने राज्य के विस्तार को समर्थन दिया। सभाओं का महत्व धीरे-धीरे कम होने लगा और राजा (सम्राट) अधिक शक्तिशाली हो गया। उसने नियमित सेना बनाए रखी जिसमें राजन्य (क्षत्रिय) योद्धा के रूप में कार्य करते थे। प्रमुख विधि-निर्माताओं में मनु (मनुस्मृति), नारद और बृहस्पति शामिल थे।।

सामाजिक व्यवस्था

- अयोध्या, इंद्रप्रस्थ और मथुरा जैसे नगरों का विकास हुआ। इस काल में स्त्रियों की स्थिति में गिरावट आई तथा उन्हें सभा से बाहर रखा गया, उत्तराधिकार और संपत्ति के अधिकार से वंचित किया गया तथा ऐतरेय ब्राह्मण के अनुसार पुत्री को बोझ माना गया।
- शूद्रों और स्त्रियों को वैदिक शिक्षा, गायत्री मंत्र और उपनयन संस्कार का अधिकार नहीं था।
- ब्राह्मण समाज में एक सम्मानित पुजारी वर्ग के रूप में प्रतिष्ठित हुए।
- गोत्र प्रणाली ने वंश परंपरा पर बल दिया।
- चांडाल (अस्पृश्य) वर्ण व्यवस्था से बाहर माने जाते थे।
- प्रचलित धातुओं में सोना, तांबा/लोहा, टिन, सीसा और चांदी शामिल थी।

आर्थिक व्यवस्था

- प्रमुख व्यवसायों में कृषि, पशुपालन, व्यापार और उद्योग शामिल थे।
- लगभग 1200 ईसा पूर्व तक कृष्ण अयस (लोहा) ज्ञात था और 800 ईसा पूर्व तक कुल्हाड़ी व हल जैसे औजारों का व्यापक उपयोग होने लगा।
- भूमि परिवार-आधारित होती थी जिसका संचालन गृहपति (परिवार मुखिया) करता था।
- व्यापारी श्रेणियों (गिल्डों) में संगठित थे जिनका नेतृत्व श्रेष्ठिन् करते थे।
- मूल्य की इकाइयाँ थी — निष्क (स्वर्ण), शतमान (सौ इकाई) और कृष्णल (1 रत्ती)।
- कर अनिवार्य था, मुख्यतः वैश्य वर्ग पर लगाया जाता था। कर-संग्राहक को 'भागदुघ' तथा कोषाध्यक्ष को 'संग्रहीत्री' कहा जाता था।

धर्म

- इस काल को ब्राह्मणीय युग कहा जाता है, जिसमें सरल उपासना पद्धति जटिल यज्ञों में परिवर्तित हो गई।
- वरुण, पृथ्वी, इंद्र, अग्नि जैसे प्रचलित देवताओं का महत्त्व कम होने लगा जबकि प्रजापति (सृष्टिकर्ता), विष्णु और रुद्र जैसे नए देवता प्रमुख होने लगे।
- प्रमुख ग्रंथों में यज्ञों पर केंद्रित संहिताएँ और ब्राह्मण ग्रंथ शामिल थे।
- कर्म, माया, पुनर्जन्म और आत्मा (ब्रह्म) जैसे दार्शनिक सिद्धांतों की अवधारणा प्रस्तुत हुई। इन विचारों का प्रथम दार्शनिक प्रतिपादन उपनिषदों में हुआ।
- प्रमुख सूत्र ग्रंथों में श्रौत सूत्र (सार्वजनिक यज्ञ), गृह्य सूत्र (घरेलू संस्कार), धर्म सूत्र (सामाजिक कर्तव्य एवं नैतिक आचरण), और शुल्व सूत्र (यज्ञ वेदियों का निर्माण व ज्यामिति) शामिल थे।
- अत्यधिक कर्मकांड और पुजारी वर्चस्व से असंतोष के कारण जैन धर्म और बौद्ध धर्म जैसे सुधारवादी धर्मों का उदय हुआ।

वर्ण व्यवस्था

- प्रारंभ में केवल तीन वर्ण थे — ब्राह्मण (पुरोहित), क्षत्रिय (योद्धा) और वैश्य (सामान्य जन)।
- बाद में चौथा वर्ण शूद्र (श्रमिक/सेवक) जोड़ा गया।
- समाज के बाहर रहने वाले चांडालों को पाँचवें वर्ग के रूप में माना गया।
- परिणामस्वरूप चार वर्णों की व्यवस्था स्थापित हुई:
  - ✓ ब्राह्मण – पुरोहित
  - ✓ क्षत्रिय – योद्धा / शासक
  - ✓ वैश्य – व्यापारी / कृषक
  - ✓ शूद्र – सेवक / श्रमिक

Toppers Notes
Unleash the topper in you

5 CHAPTER बौद्ध धर्म और जैन धर्म

बौद्ध धर्म

- इसकी स्थापना छठी शताब्दी ईसा पूर्व में शक वंश के क्षत्रिय राजकुमार गौतम सिद्धार्थ ने की थी।

गौतम बुद्ध:

- बौद्ध धर्म कपिलवस्तु, लुम्बिनी (भारत-नेपाल सीमा के पास) के शाक्य वंश (क्षत्रिय) के सिद्धार्थ गौतम (जन्म लगभग 563 ईसा पूर्व) की शिक्षाओं और जीवन पर आधारित है। इनके परिवार में शामिल है- शुद्धोधन (पिता), माया/महामाया देवी(माता), महाप्रजापति गौतमी (सौतेली माँ), यशोधरा या भद्दकच्चना/गोपा (पत्नी) और राहुल(पुत्र)।
- 29 वर्ष की आयु में, उन्होंने राजसी जीवन त्यागकर तपस्वी जीवन अपनाया और बोधगया में एक पीपल के पेड़ के नीचे 49 दिनों के ध्यान के बाद, 35 वर्ष की आयु में बुद्ध को ज्ञान (बोधि) की प्राप्ति हुई, उस समय उत्तर भारत में 16 महाजनपद मौजूद थे (7वीं-6वीं शताब्दी ईसा पूर्व) ।

ज्ञान प्राप्ति के बाद

- बुद्ध ने पहला उपदेश सारनाथ में धर्मचक्रप्रवर्तन (धर्म चक्र प्रवर्तन) के रूप में दिया था, जिसे अशोक के सिंह स्तंभ द्वारा स्मरण किया जाता है, जिसमें उनके शिष्य आनंद, सारिपुत्त, महामोग्गल्लायन और महाकच्चायन उपस्थित थे; इसके बाद के अधिकांश उपदेश पाली भाषा में श्रावस्ती में दिए गए, जिसमें अग्नि उपदेश (आदित्तपरीय सुत्त) भी शामिल है; महापरिनिर्वाण 483 ईसा पूर्व में कुशीनगर में हुआ, जिसमें उनके अंतिम शब्द थे: "आत्मदीपो भवः।

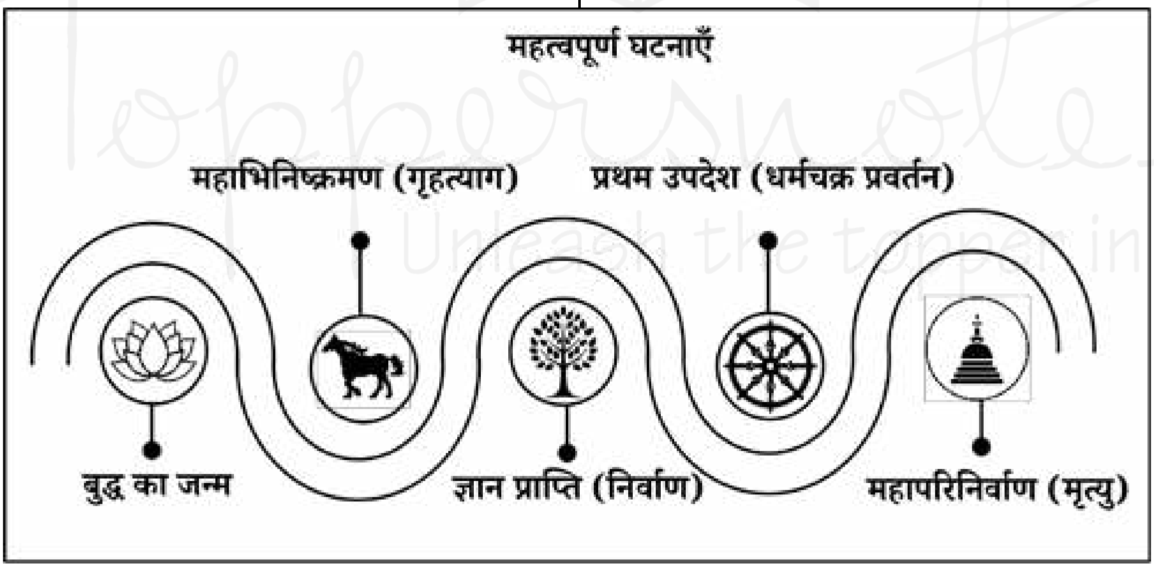

बुद्ध की शिक्षाएँ

- मुख्य शिक्षाएँ: चार आर्य सत्य (आर्य-सच्चानि) और अष्टांगिक मार्ग (अट्ठांगिक मग्गा)।
- **अष्टांगिक मार्ग (अट्ठांगिक मग्ग)**
  - ✓ सम्यक समाधि (सही ध्यान)
  - ✓ सम्यक संकल्प (सही विचार या निश्चय)
  - ✓ सम्यक स्मृति (सही जागरूकता)
  - ✓ सम्यक व्यायाम (सही प्रयास)
  - ✓ सम्यक आजीव (सही आजीविका)
  - ✓ सम्यक कर्मान्त (सही आचरण)
  - ✓ सम्यक वाचा (सही वाणी)

चार आर्य सत्य

1. दुख (दुःख) जीवन में अंतर्निहित है।
2. प्रत्येक दुख का एक कारण (समुदाय) होता है।
3. दुख का अंत (निरोध) किया जा सकता है।
4. अष्टांगिक मार्ग का अनुसरण करके इसका अंत किया जा सकता है।

अन्य सिद्धांत

- अनात्मवाद - कोई स्थायी आत्मा नहीं है।
- त्रि-रत्न - बुद्ध, धम्म, संघ।

बौद्ध संगीतियाँ

संगीति / तिथि व स्थान	राजा व अध्यक्ष	प्रमुख परिणाम
प्रथम (483 ई.पू., राजगृह – सप्तपर्णी गुफा)	राजा: अजातशत्रु अध्यक्ष: महाकश्यप	➢ बुद्ध के उपदेशों का संकलन **त्रिपिटक** के रूप में किया गया — विनय पिटक, सुत्त पिटक और अभिधम्म पिटक।
द्वितीय (383 ई.पू., वैशाली)	राजा: कालाशोक अध्यक्ष: सबकामीर	➢ संघ के आचरणों पर मतभेद के कारण बौद्ध धर्म दो शाखाओं में विभाजित हुआ — **स्थविरवादि** और **महासांघिक**।
तृतीय (250 ई.पू., पाटलिपुत्र)	राजा: अशोक अध्यक्ष: मोग्गलिपुत्त तिस्स	➢ अभिधम्म पिटक में **कथावत्थु** जोड़ा गया, विदेशों (श्रीलंका आदि) में बौद्ध मिशन भेजे गए, तथा बौद्ध धर्म का अंतरराष्ट्रीय विस्तार हुआ।
चतुर्थ (72 ई., कुंडलवन – कश्मीर)	राजा: कनिष्क अध्यक्ष: वसुमित्र उपाध्यक्ष: अश्वघोष	➢ त्रिपिटक पर टीकाओं का संकलन, **'महाविभाष'** ग्रंथ की रचना और बौद्ध धर्म का विभाजन — **महायान** व **हीनयान** में।

बौद्ध धर्म की विभिन्न शाखाएँ

पहलू	हीनयान	महायान	वज्रयान
अर्थ	लघुयान (छोटा वाहन)	महायान (बड़ा वाहन)	वज्रयान (वज्र वाहन)
प्रसार	श्रीलंका, म्यांमार, थाईलैंड, दक्षिण-पूर्व एशिया	चीन, जापान, कोरिया, वियतनाम, तिब्बत	बंगाल, बिहार, नेपाल, भूटान, तिब्बत (पद्मसंभव के माध्यम से)
लक्ष्य	व्यक्तिगत मोक्ष (स्व-निर्वाण)	सामूहिक मोक्ष (बोधिसत्वों के माध्यम से)	अनुष्ठानों व तांत्रिक साधना के माध्यम से ज्ञान (प्रबोधन)
बुद्ध	ऐतिहासिक मानव, देवता नहीं	बुद्ध देवता के रूप में पूजनीय	बुद्ध देवतुल्य; तांत्रिक देवता केंद्र में
सिद्धांत / अवधारणा	अर्हत / अरहंत पर बल	बोधिसत्व, करुणा और शून्यता पर बल	अनुष्ठान, मन्त्र और तांत्रिक साधनाएँ
संरक्षण / आश्रयदाता	अशोक, शैलेन्द्र वंश (जावा)	चीनी एवं तिब्बती शासक	तिब्बती शासक (विशेषकर 11वीं शताब्दी में)
मुख्य ग्रंथ	पाली त्रिपिटक	मूलमाध्यमिककारिका, सूत्रालंकार, ललितविस्तार	तिब्बती तंत्र, वज्रयान ग्रंथ

हीनयान एवं महायान में प्रमुख प्रतीक

घटना	हीनयान (प्रतीकात्मक रूप)	महायान (रूपात्मक / मूर्त रूप)
जन्म	हाथी और कमल	माया का स्वप्न
संन्यास	घोड़ा	बुद्ध (भिक्षु रूप में) घोड़े के साथ

ज्ञानप्राप्ति	पीपल वृक्ष	भूमि-स्पर्श मुद्रा
प्रथम उपदेश	चक्र (आठ तीलियाँ)	धर्मचक्र प्रवर्तन मुद्रा
महापरिनिर्वाण (मृत्यु)	स्तूप	महापरिनिर्वाण मुद्रा (दाहिनी करवट लेटे हुए, सिर हथेली पर टिकाए)

बौद्ध साहित्य

- जातक कथाएँ: बुद्ध के पिछले जन्मों की लगभग 600 कहानियाँ; लगभग 300 ईसा पूर्व संकलित।
  - ✓ ,मातंग जातक: बुद्ध पूर्वजन्म में चांडाल के रूप में।
- **दीघ निकाय** – 34 दीर्घ उपदेश।
- **मज्झिम निकाय** – मध्यम लंबाई के उपदेश।
- **संयुक्त निकाय** – परस्पर संबंधित उपदेश।
- **अंगुत्तर निकाय** – संख्यात्मक रूप में वर्गीकृत उपदेश।
- **अश्वघोष** – बुद्धचरित, सौंदरानंद के रचयिता।
- **बुद्धघोष** – विसुद्धिमग्ग के रचयिता।
- **वसुबंधु** – अभिधर्मकोश के रचयिता।
- **मिलिंद प्रश्न (मिलिंदपन्हो)** – इंडो-ग्रीक राजा मिनांडर (मिलिंद) और बौद्ध भिक्षु नागसेन के बीच संवाद।

जैन धर्म

- जैन धर्म की उत्पत्ति ईसा पूर्व 6वीं शताब्दी में ब्राह्मणवाद के विरोध स्वरूप हुई, जिसने एक गैर-ब्राह्मणिक धर्म की स्थापना की। तीर्थंकर या जिन वह मानव होता है जो तपस्या के माध्यम से ज्ञान (सर्वज्ञता) प्राप्त करता है और आध्यात्मिक मार्गदर्शक बनता है।
- प्रथम तीर्थंकर ऋषभदेव थे, जो चक्रवर्ती राजा भरत के पिता थे (जिनका उल्लेख श्रीमद्भागवत और ऋग्वेद में मिलता है)। उन्होंने कैलाश पर्वत पर देह त्याग किया और उनका प्रतीक बैल है।
- कुल 24 तीर्थंकर हुए जो सभी क्षत्रिय वर्ग से थे, जिनमें अंतिम वर्धमान महावीर थे जिन्होंने ब्रह्मचर्य को अपने प्रमुख उपदेश के रूप में प्रतिपादित किया।

महावीर (निगंठ/नायपुत्र)

- **जन्म:** वर्धमान के रूप में चैत्र शुक्ल त्रयोदशी, ईसा पूर्व 540 में कुंडग्राम (वैशाली के निकट) में हुआ।
- **परिवार**
  - ✓ पिता: सिद्धार्थ – ज्ञातृक कुल के प्रमुख।
  - ✓ माता: त्रिशला – वैशाली के लिच्छवि राजकुमार चेटक की बहन।
- **विवाह एवं संतान:** यशोदा (पत्नी), प्रियदर्शना (पुत्री), जमाली (दामाद एवं इनके प्रथम शिष्य)।
- **संन्यास:** 30 वर्ष की आयु में उन्होंने गृहत्याग कर 12 वर्षों तक कठोर तपस्या की।
- **ज्ञान प्राप्ति:**
  - ✓ 42 वर्ष की आयु में ऋजुपालिका नदी के तट पर जंभिकाग्राम के समीप कैवल्य (सर्वोच्च ज्ञान) की प्राप्ति हुई।
  - ✓ तपस्या के 13वें वर्ष में केवल्य (मोक्ष) की प्राप्ति हुई।
- मृत्यु: 527 ईसा पूर्व में 72 वर्ष की आयु में पावापुरी (पटना के निकट) में उनका निधन हुआ जिसे मल्ल और लिच्छवि जातियों ने दीपोत्सव के रूप में मनाया।

प्रमुख जैन तीर्थंकर

तीर्थंकर एवं जन्मस्थान	प्रतीक	निर्वाण (मृत्यु स्थान)
1. ऋषभनाथ (आदिनाथ) – अयोध्या (कोशल)	बैल	कैलाश पर्वत
2. अजीतनाथ – अयोध्या	हाथी	सम्मेद शिखर (पारसनाथ पर्वत, झारखंड)
3. सम्भवनाथ – श्रावस्ती	घोड़ा	सम्मेद शिखर
19. मल्लिनाथ – मिथिला (बिहार)	कलश (जलपात्र)	सम्मेद शिखर
22. नेमिनाथ (अरिष्टनेमि) – सौरीपुर (द्वारका के निकट, गुजरात)	शंख	गिरनार पर्वत (गुजरात)
23. पार्श्वनाथ – वाराणसी	सर्प (सर्पफन)	सम्मेद शिखर
24. महावीर (वर्धमान) – कुंडग्राम (वैशाली, बिहार)	सिंह	पावापुरी (बिहार)

जैन धर्म के सिद्धांत

- मोक्ष त्रि-रत्न के माध्यम से प्राप्त किया जा सकता है:

1. सम्यक दर्शन (सम्यक दर्शन)
2. सम्यक ज्ञान (सम्यक ज्ञान)
3. सम्यक आचरण (सम्यक चरित्र)

जैन धर्म के पाँच सिद्धांत

1. अहिंसा - जीवो के प्रति हिंसा न करना (सूत्रकृतांग सूत्र) ।
2. सत्य - सत्यनिष्ठा (झूठ न बोलना) ।
3. अस्तेय - चोरी न करना।
4. अपरिग्रह- वस्तुओं का संग्रह न करना एवं अनासक्ति।
5. ब्रह्मचर्य - ब्रह्मचर्य/संयम।

- ✓ "नमो अरिहंतानम" - नवकार मंत्र की एक पंक्ति जिसका अर्थ है "मैं सभी अरिहंतों को नमन करता हूँ"। अरिहंत वे आत्माएँ है जिन्होंने पूर्ण ज्ञान, दर्शन, आनंद और शक्ति प्राप्त कर ली है।
- ✓ निर्वाण - जब कोई तीर्थंकर जन्म और मृत्यु (संसार) के चक्र पर विजय प्राप्त करके नश्वर शरीर छोड़ता है तो उसे निर्वाण या मोक्ष कहा जाता है।
- ✓ **बसदी -** जैन मंदिर या मठ, विशेष रूप से कर्नाटक में प्रचलित।

जैन संगीतियाँ:

संगीति	स्थान और अध्यक्षता	प्रमुख योगदान
प्रथम जैन संगीति	पाटलिपुत्र (वर्तमान पटना), 300 ईसा पूर्व, अध्यक्षता – स्थूलभद्र	12 अंगों (मूल जैन ग्रंथों) का संकलन
द्वितीय जैन संगीति	वल्लभी (गुजरात), 512 ईस्वी, अध्यक्षता – देवर्धि क्षमाश्रमण	ग्रंथों का अंतिम संकलन, 12 उपांग जोड़े गए, महावीर की शिक्षाओं का संरक्षण

जैन धर्म के संप्रदाय और उप-संप्रदाय

पक्ष	श्वेतांबर (श्वेत वस्त्रधारी)	दिगंबर (नग्न या आकाश वस्त्रधारी)
उत्पत्ति और नेतृत्वकर्ता	स्थूलभद्र के नेतृत्व में मगध क्षेत्र में ही रहे।	भद्रबाहु के नेतृत्व में दक्षिण भारत (अकाल में) चले गए।
वस्त्र	साधारण श्वेत वस्त्र धारण करते हैं।	वस्त्र नहीं पहनते; निर्वस्त्रता को मोक्ष के लिए आवश्यक मानते हैं।
पवित्र ग्रंथ	जैन आगमों (अंग और अंग बाह्य) को मान्यता देते हैं।	मूल आगमों की प्रमाणिकता को अस्वीकार करते हैं; आचार्य कुंदकुंद के ग्रंथों का अनुसरण करते हैं।
प्रमुख उपसंप्रदाय	मूर्तिपूजक, स्थानकवासी, तेरापंथी	बीसपंथ, तेरापंथ, तारणपंथ (समैयापंथ)
शाही संरक्षण	गुजरात के चालुक्य शासक कुमारपाल ने आचार्य हेमचंद्र के नेतृत्व में संरक्षण दिया।	चंद्रगुप्त मौर्य और गंग वंश, कदंब और राष्ट्रकूट जैसे दक्षिण भारत के शासक।

आजीवक / आजीविक संप्रदाय

- बुद्ध और महावीर (छठी शताब्दी ईसा पूर्व) के समकालीन मक्खलि गोशाल (गोशाल मस्करिपुत्र) द्वारा स्थापित।
- सब कुछ ब्रह्मांडीय व्यवस्था (नियति) द्वारा पूर्व-निर्धारित है।
- परमाणुवाद में विश्वास - ब्रह्मांड प्राकृतिक नियमों के तहत संयुक्त अविभाज्य कणों से बना है।
- संरक्षण: बिन्दुसार (अशोक के पिता) आजीवक अनुयायी थे।
- अशोक ने बराबर पहाड़ियों (बिहार) की गुफाओं को आजीवक भिक्षुओं को समर्पित किया (उदाहरण के लिए, लोमस ऋषि गुफा, सुदामा गुफा, नागार्जुनी गुफा)।